Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 10, October - 2026

DOIs:10.2018/SS/202610015 --:-- Research Paper / Article / Review

महायान के बारे में राहुल सांकृत्यायन जी की बुद्धचर्यागत दृष्टि की समीक्षा

डॉ.माईराम
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै (तमिळ् नाडु)
Email – mairam.sanskrit@mkuniversity.ac.in

सारांश: प्रस्तुत शोधपत्र प्रख्यात विचारक और अकादमिक विद्वान् राहुल सांकृत्यायन जी के द्वारा बुद्धचर्या नामक ग्रन्थ में महायान बुद्धधम्म के बारे में व्यक्त किये गए विचारों की तर्कपूर्ण समीक्षा के लिए किए गए अध्ययन का विवरण प्रस्तुत करता है। राहुल जी ने वहाँ लिखा है कि महायान तक आते-आते, बुद्धधम्म के अनुयायियों को बुद्ध की सीधी-सादी और सरल शिक्षाओं पर विश्वास न रहा। महायान ने पूजापाठ और धारणी नामक मन्त्रों के द्वारा निर्वाण को सुगम बना दिया यही आगे चलकर वज्रयान रूपी तान्त्रिक यानी बीभत्स रूप में आ गया। राहुल जी अपने जमाने में बुद्ध-अध्ययन के बहुत बड़े विचारक और विवेचक थे। इसलिए, उनकी बात को हल्के में नहीं लिया जा सकता। अतः उनके इस मत की महायानी बौद्ध साहित्य के मूल ग्रन्थों के प्रकाश में जाँच-परख करना अनिवार्य हो जाता है। इस अध्ययन में मूलपाठ-आधारित अध्ययन, विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक और तुलनात्मक शोध-प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। इस शोधपत्र में सबसे पहले बुद्धधम्म की दोनों प्रमुख चिन्तन-परम्पराओं में प्रतिपादित निर्वाण की अवधारणाओं का विवेचन किया गया है। इसके बाद महायानेतर बौद्धों में पूजा-पाठ के अस्तित्व का स्पष्टीकरण किया गया है। फिर, महायान के सूत्र-ग्रन्थों में पूजा के पुण्य की निर्वाण-प्रप्ति में सामर्थ्य की परीक्षा की गई है। तत्पश्चात्, महायानी सूत्र-ग्रन्थों में वर्णित धारणियों के स्पष्टतयोक्त लक्ष्यों पर विचार किया गया है और अन्त में, पूजा और धारणियों के अलावा महायान के दार्शनिक और चिन्तनात्मक योगदान पर भी विचार किया गया है।

कुंजी शब्द : पूजा, धारणी, निर्वाण, महायान, सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र, बुद्धचर्या, राहुल, निर्वाण की सुगमता।

1. INTRODUCTION:

प्राचीनकाल में बुद्धधम्म ने भारतीय चिन्तन-परम्परा में एक सशक्त हस्तक्षेप करके राजा-महाराजाओं से लेकर आमजन तक को गहरे में जाकर प्रभावित किया। इसी कारण, जब आधुनिक युग में अठारहवीं शताब्दी में यूरोपीय विद्वानों के द्वारा बुद्धधम्म और उसकी भव्य संस्कृति की खोज के कारण उपनिवेश काल में भारत के पढे-लिखे लोगों में अपने देश के प्रति सम्मान तथा भारतीयता के प्रति गौरव के भाव से आपूरित कर दिया था। इससे यूरोपीय विद्वानों की तर्ज पर ही भारतीय विद्वानों ने भी पहले थेरवाद के पालि साहित्य का अध्ययन किया और वहाँ तथागत सम्मा सम्बुद्ध के तर्कसंगत विचारों को पढकर अपने देश की प्राचीन प्रतिभा के प्रति सम्मान का अनुभव किया। लेकिन, इससे बाद के महायानी बौद्ध साहित्य के प्रति केवल उपेक्षा ही नहीं तिरस्कार का भाव भी पैदा हो गया, क्योंकि महायान के साहित्य में मूल पालि साहित्य नहीं था। उसके साहित्य में पालि की जगह गाथा-संस्कृत भाषा का प्रयोग मिलता है और सिद्धान्तों में कुछ परिवर्तन दिखाई देता है। इस तरह, पालि साहित्य में उपलब्ध विचारों को ज्यादा प्राचीन मानने से भी, प्राचीनता के प्रति इस तरह के मोहके कारण महायान बुद्धधम्म के बारे में उपेक्षा व तिरस्कार के भाव पनप गये। फलतः भारतीय हिन्दी अकादमिक जगत् में एक नकारात्मक धारणा चलती रही है कि बुद्धधम्म में उत्पन्न हुई विकृति यानी बुराई को ही महायान कहा जाता है। इस धारणा के प्रमुख प्रचारकों में महापण्डित राहुल सांकृत्यायन और रामचन्द्र शुक्ल का नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय है। इनमें से भी राहुल सांकृत्यायन ने तो खुद भी बौद्ध साहित्य का गहन अध्ययन किया था। इसलिए, उनके विचारों को पढे-लिखे लोगों ने ज्यादा गम्भीरता से लिया और उनके द्वारा प्रचारित विचार अत्यन्त विश्वसनीय मान लिए गए।

राहुल सांकृत्यायनजी ने ***बुद्धचर्या*** नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में महायान बुद्धधम्म की आलोचना करते हुए लिखा है - "महायान ने ही धारणियों और पूजाओं से निर्वाण को सुगम कर दिया था वज्रयान ने तो उसे एकदम सहज कर दिया; इसीलिए आगे चलकर वज्रयान 'सहजयान' भी कहा जाने लगा।[1]"

[1] सांकृत्यायन, राहुल(1952), *बुद्ध-चर्य्या (भगवान् बुद्ध की जीवनी और उपदेश)*,महाबोधि सभा, बनारस, पृष्ठसंख्या10

इसका तात्पर्य यह है कि महायान बुद्धधम्म के विचारकों ने धम्म के सरलीकरण के नाम पर धम्म को विकृत कर दिया। जिस धम्म में पहले सुसंस्कारों की धूम थी, वही धम्म आज बुद्ध की सीधी-सादी शिक्षाओं को भूलकर सिर्फ पूजा-पाठ और धारणी नामक मन्त्रों के जप को ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग मानने लगा। इससे जनता में धम्म के प्रति गम्भीरता कम हो गई और सिर्फ कर्मकाण्ड के फेर में पड़ गई। इससे धम्म के नाम पर विकृतियाँ बढने लगी और धीरे-धीरे महायान से वज्रयान और सहजयान में परिवर्तित होता चला गया।

2. RESEARCH QUESTION:

भले ही राहुल जी ने इस तरह के विचार व्यक्त कर दिए, लेकिन, यह सम्भव नहीं है कि एक धर्म सिर्फ पूजा-पाठ और मन्त्रों के बल पर इतने लम्बे समय तक टिका रह सके। जबकि महायान तो मंगोलिया, रूस, चीन, जापान, कोरिया, विएतनाम, और तिब्बत आदि देशों में आज तक विद्यमान है। इसलिए, सवाल उठता है कि क्या इन देशों में महायान आज तक सिर्फ मन्त्रों और पूजा-पाठ के बल पर ही टिका हुआ है। साथ ही, यह सवाल भी उठता है कि क्या भारत में भी महायान का इतिहास सिर्फ पूजा और मन्त्रों तक ही सीमित रहा था।

3. OBJECTIVES:

इस शोध का उद्देश्य राहुल सांकृत्यायन जी के मत की मूलपाठ पर आधारित समीक्षा प्रस्तुत करना है ताकि उनके मत की सबलता और अबलता का सही-सही बोध प्राप्त किया जा सके।

4. RESEARCH METHODOLOGY:

इस शोधपत्र में मूलपाठ-आधारित अध्ययन, विश्लेषण और विवेचन के साथ-साथ तुलनात्मक शोध-पद्धति का भी प्रयोग किया जाएगा।

6. ANALYSIS :

अब राहुल जी के इस प्रस्तुतीकरण पर विचार किया जा रहा है ताकि यह समझना सरल हो सके कि महायान के बारे में उनके विचार किस स्तर तक मूल साहित्य और जमीनी यथार्थ पर आधारित रहे हैं।

(1) महायान की दृष्टि में थेरवादी निर्वाण अलक्ष्य – सबसे पहले तो यह जान लेना चाहिए कि महायान निकाय को थेरवादी अवधारणा वाला निर्वाण स्वीकार ही नहीं है। इस विषय में डॉ. टशी पलजोर लिखते हैं –

> "हीनयान की दृष्टि से मनुष्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य निरुपधिशेष निर्वाण है। महायानी लोग अप्रतिष्ठितनिर्वाण और सर्वज्ञता के पद को अन्तिम लक्ष्य मानते हैं। अप्रतिष्ठितनिर्वाण की प्राप्ति के लिए क्लेश और ज्ञेय आवरणों का त्याग करना परम आवश्यक है। इस महान् उद्देश्य के लिए महायानी साधक मार्ग की अवस्था में अथक परिश्रम कर प्रज्ञा और उपाय का अभ्यास करते हैं। समस्त क्लेशावरणों के प्रहाण को निर्वाण कहा जाता है। इसे मोक्ष भी कहते है। बुद्ध के धर्मकाय में भी जो स्वभावकाय है वह यही है। बुद्ध का स्वभावकाय नित्य होता है तथा ज्ञानधर्मकाय अनित्य। निर्वाण को नित्य और प्रसज्य प्रतिषेध मान जाता है। सौत्रान्तिक, विज्ञानवाद और माध्यमिक तीनों निर्वाण को प्रसज्य प्रतिषेध मानते हैं। समस्त क्लेशावरणों का प्रहाण कर जो क्लेशावरणरहित चित्त की सन्तति है, उसे निर्वाण व मोक्ष कहते हैं। सोपधिशेष निर्वाण की प्राप्ति के पश्चात् साधक के चित्त में पुनः क्लेश उत्पन्न नहीं होता है। परन्तु हीनयान के श्रावक और प्रत्येकबुद्ध के चित्त में ज्ञेयावरण विद्यमान रहता है। जिसके कारण वे बुद्धत्व को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इन दोनों आवरणों का प्रहाण करने से बोधिसत्त्व अर्हत् के पद को प्राप्त करते हैं। महायान के अनुसार प्रथम भूमि से सातवीं भूमि तक बोधिसत्त्व क्लेशावरणों का प्रहाण करते हैं तथा आठवीं भूमि से दसवीं भूमि तक केवल ज्ञेयावरण का ही प्रहाण करते हैं। भोटदेश के कुछ विद्वानों का मत है कि बोधिसत्त्व प्रथम भूमि से सातवीं भूमि तक क्लेश और ज्ञेय आवरणों का सामान्य रूप से प्रहाण करते है तथा आठवीं भूमि से दसवीं भूमि तक केवल ज्ञेयावरणों का ही प्रहाण करते है। आचार्य सोनम डगपा ने अशेष क्लेशों के प्रहाण के प्रतिसंख्यानिरोध को सामान्य निर्वाण का स्वरूप बताया है। निर्वाण का शब्दों द्वारा भेद करने पर चार प्रकार के निर्वाण हो जाते हैं। वे हैं – स्वभावनिर्वाण, अप्रतिष्ठितनिर्वाण, सोपधिशेषनिर्वाण तथा निरुपधिशेषनिर्वाण। पहला धर्मता स्वभावनिर्वाण कहलाता है। दूसरा क्लेशावरण और ज्ञेयावरण दोनों का प्रहाण या निरोधस्वरूप अप्रतिष्ठितनिर्वाण कहलाता है। यह भवान्त और शमान्त में नहीं रहता है। अप्रतिष्ठितनिर्वाणप्राप्त सत्त्व भवान्त अथात् छह सत्त्वयोनियों से मुक्त हो जाता है। इनसे मुक्त होने पर छह योनियों में जन्म लेकर दुःखों को भोगना नहीं पड़ता है। परन्तु छह योनियोंसे मुक्त होने पर भी श्रावक एवं प्रत्येकबुद्ध शमान्त में पतित हो जाते है। महायानी शमान्त को भी अन्तिम प्राप्ति न मानकर इसे भी बन्धन मानते है। इसे अन्तिम उपलब्धि न

मानने के कारण बुद्ध उन्हें महायान धर्मों का उपदेश प्रदान कर महायान के मार्ग में प्रवेश कराते हैं। भव अर्थात् संसार का अन्त तथा शम अर्थात् निर्वाण का अन्त इन दोनों अन्तों में न रहने के कारण परिनिर्वाण को अभिसम्बोधि कहते हैं।"[2]

इस विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि जब एक महायानी साधक थेरवादी निर्वाण यानी सिर्फ क्लेशावरण के क्षय से भी आगे जाकर ज्ञेयावरण का भी क्षय कर देना चाहता है, तो उसे एक थेरवादी साधक से ज्यादा समय भी लगाना पड़ेगा। इस तरह, महायान तो निर्वाण की प्राप्ति को और ज्यादा जटिल बनाता है, न कि सुगम। इस विषय में आचार्य असङ्ग के विचारों को पेश करते हुए आचार्य नरेन्द्रदेव लिखते हैं –

"श्रावकयान और महायान का अन्योऽन्यविरोध है। पाँच प्रकार से इनका विरोध है – आशय, उपदेश, प्रयोग, उपस्तम्भ, काल। श्रावकयान में आत्मपरिनिर्वाण के लिए ही आशय होता है। इसी के लिए इसका उपदेश और प्रयोग है। इसका उपस्तम्भ (आधार) परीत्त है, और पुण्यसम्भार में संगृहीत है। इसके अर्थ की प्राप्ति भी अल्पकाल में ही होती है, यहाँ तक कि तीन जन्म में भी हो जाती है। किन्तु महायान में इसका सब विपर्यय है।"[3]

स्पष्ट है कि थेरवादी निर्वाण का लक्ष्य सिर्फ अपने आप को ही दुःख से मुक्त करना है, न कि अन्य प्राणियों को भी। इसके ठीक विपरीत, महायान का लक्ष्य सिर्फ अपने-आप को ही दुःख से मुक्त करना न होकर, सभी जीवों को दुःख से मुक्त करना है। इसीलिए महायान में बोधिसत्त्व को अपनी साधना का आदर्श माना जाता है, जिसका लक्ष्य ही सभी प्राणियों को दुःख से मुक्ति दिलाना है। अब एक व्यक्ति की मुक्ति की बजाय सबकी मुक्ति के लिए किये जाने वाले प्रयास में तो वैसे भी ज्यादा समय लगना ही है। इसी कारण आचार्य असंग ने कहा है कि थेरवाद में तो अल्पकाल में ही निर्वाण प्राप्त हो जाता है और महायान में इसके विपरीत है। और तो और, आचार्य असंग को तो तीन जन्म में भी निर्वाण की प्राप्ति अल्पकाल लग रही है। इससे भी यही स्पष्ट होता है कि महायान ने निर्वाण की प्राप्ति को सुगम नहीं, बल्कि बेहद कठिन बना दिया है।

(2) जीवों की दुःखमुक्ति के लिए किये जाने वाले प्रयत्न की अपेक्षा महायानी निर्वाण भी एक गौण लक्ष्य – महायान में तो खुद महायानी निर्वाण को भी जीवों के दुःख दूर करने के प्रयास से कम महत्त्व प्राप्त है। आचार्य नरेन्द्रदेव लिखते हैं –

"अन्य बोधिसत्त्वों और अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व में अन्तर यह है कि अवलोकितेश्वर बोधिसत्त्व ने बोधि की प्राप्ति की है, किन्तु जब तक संसार का एक भी सत्त्व दुःख में बद्ध रहेगा तब तक निर्वाण प्राप्त न करने का उनका संकल्प है। वास्तव में वे बुद्ध ही हैं, किन्तु जिस समय अन्य बुद्ध निर्वाण को यथा समय प्राप्त होते हैं उस प्रकार अवलोकितेश्वर निर्वाण में प्रवेश न करेंगे। वे सदा बोधिसत्त्व की साधना से सम्पन्न हैं। इससे उनकी श्रेष्ठता कम नहीं होती।"[4]

जब महायान के अनुसार एक बोधिसत्त्व की नजर में खुद महायान-प्रोक्त निर्वाण भी अन्य प्राणियों को दुःख से मुक्ति दिलाने की अपेक्षा कम महत्त्व की चीज है, तो महायान ने निर्वाण को सरल कैसे कर दिया? इससे तो यही पता चलता है कि महायान ने जनसेवा के सामने निर्वाण को ही गैर-जरूरी सा बना दिया है।

(3) पूजा की अवधारणा केवल महायान में नहीं – पूजा की अवधारणा केवल महायान में ही नहीं है। इसके लिए, भिक्षु डॉ. धर्मरक्षित द्वारा लिखित बौद्धचर्या विधि के वन्दना परिच्छेद के बुद्धपूजा शीर्षक वाले प्रकरण के अन्तर्गत निम्नलिखित वचन ध्यातव्य हैं।

वण्णगन्धगुणोपेतं एतं कुसुमसन्तति।
पूजयामि मुनिन्दस्स सिरिपाजसरोरुहे।।[5]
(मैं वर्ण, गन्ध और सुन्दर गुण से युक्त इस पुष्प से भगवान् के कमलवत् श्रीचरणों में पूजा करता हूँ।)[6]
गन्धसम्भारयुत्तेन धूपेनाहं सुगन्धिना।
पूजये पूजनेय्यन्तं, पूजाभाजनमुत्तमं।।
(गन्धसे युक्त धूप की सुगन्धि से मैं उत्तम पूजा के योग्य पूजनीय बुद्ध की पूजा करता हूँ।)
सुगन्धिकायवदनमनन्तगुणगन्धिना।
सुगन्धिनाहं गन्धेन पूजयामि तथागतं।।
(मैं सुगन्धि-युक्त शरीर एवं मुख वाले अनन्त गुण-सुगन्धि से पूर्ण तथागत की सुगन्धि की गन्ध से पूजा करता हूँ।)
घनसारप्पदित्तेन दीपेन तमधंसिना।
तिलोकदीपं सम्बुद्धं पूजयामि तमोनुदं।।

---

[2]पलजोर, टशी (2015), महायान बौद्धधर्म का साधना क्रम और काय व्यवस्था, सारनाथ, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, पृष्ठसंख्या 248-249

[3]नरेन्द्रदेव, आचार्य (2017), बौद्धधर्म-दर्शन, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, पृष्ठसंख्या 385

[4]वही, पृष्ठसंख्या 149

[5]धर्मरक्षित, भिक्षु (1956), बौद्धचर्या-विधि, वाराणसी, महाबोधि सभा, पृष्ठसंख्या 6

[6]वही, पृष्ठसंख्या 7

(अन्धकार को नष्ट करने वाले तेल से जलते हुए प्रदीप से मैं तीनों लोकों के प्रदीप-तुल्य अज्ञान-अन्धकार को नष्ट करने वाले भगवान् बुद्ध की पूजा करता हूँ।)[7]

इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया बुद्धं पूजेमि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया धम्मं पूजेमि।
इमाय धम्मानुधम्मपटिपत्तिया संघं पूजेमि।।1।।

(इस धर्म की प्रतिपत्ति से मैं बुद्ध, धम्म, संघ की पूजा करता हूँ।)[8]

यह शुद्ध तौर पर थेरवादी बौद्धचर्याविधि का अभिन्न अंग है। जब थेरवाद में भी बुद्ध,धम्म और संघ की पूजा प्रचलित रही है, तब यह कहना कि महायान ने पूजा के द्वारा निर्वाण को सुगम बना दिया था, एकदम गलतबयानी है।

(4) पूजा से प्राप्य पुण्य एक बेहद मामूली उपलब्धि – पूजा से प्राप्त होने वाले पुण्य को महायान ने माना तो जरूर है, लेकिन, उसे इतना महत्त्व नहीं दिया कि वह निर्वाण को प्राप्त कराने वाला साधन कहला सके। इस सन्दर्भ में महायान के सूत्रों में अनेक वचन मिलते हैं। जैसे, ***अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारिमतासूत्र*** में देवों के इन्द्र यानी शक्र ने तथागत से सवाल किया कि अगर कोई कुलपुत्र या कुलदुहिता इस प्रज्ञापारिमता को लिखकर और पुस्तकगत करके स्थापित करे और इसको दिव्य फूल, धूप, गन्ध, माला, विलेपन, चूर्ण, चीवर, छत्र, ध्वज, घण्टा, पताकाओं और दीपमालाओं से बहुत तरह की पूजाओं के द्वारा सत्कृत करे, गुरु की तरह माने, सम्मान करे, पूजे, अर्चना करे, सम्मान बढाये, और जो परिनिर्वाण को प्राप्त कर चुके तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध के शरीरधातुओं को स्तूपों में प्रतिष्ठित कराये, (स्तूप को) चारों ओर से सुरक्षित करे और सम्मानपूर्वक धारण करे और उसी तरह से, दिव्य फूल, धूप, गन्ध, माला, विलेपन, चूर्ण, चीवर, छत्र, ध्वज, घण्टा, पताकाओं और दीपमालाओं से बहुत तरह की पूजाओं के द्वारा सत्कृत करे, गुरु की तरह माने, सम्मान करे, पूजे, अर्चना करे, सम्मान बढाये, तो उन दोनों में से कौन-सा कुलपुत्र या कौन-सी कुलदुहिता एक की अपेक्षा ज्यादा पुण्य पैदा करेगा। इस सवाल के जवाब में तथागत सम्मा सम्बुद्ध ने कहा है –

"तिष्ठन्तु खलु पुनः कौशिक कोटिशः सप्तरत्नमयास्तथागतधातुगर्भाः स्तूपाः, यः कश्चित् कौशिक कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा इमं जम्बूद्वीपं समन्तात् सप्तरत्नमयानां तथागतधातुगर्भाणां स्तूपानां परिपूर्णं कारयेत्, कारयित्वा च तान् यावज्जीवं दिव्यैः पुष्पैर्दीपैर्धूपैर्दिव्यैर्गन्धैर्दिव्यैर्माल्यैर्दिव्यैर्विलेपनैर्दिव्यैश्चूर्णैर्दिव्यैवस्त्रैर्दिव्यैश्छत्रैर्दिव्यैर्ध्वजैर्दव्याभिर्घण्टाभिः, दिव्याभिः पताकाभिः समन्ताच्च दीपमालाभिः बहुविधाभिश्च दिव्याभिः पूजाभिः सत्कुर्यात् गुरुकुर्यात् मानयेत् पूजयेत् अर्चयेत् अपचायेत्, तत्किं मन्यसे कौशिक अपि नु स कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा ततोनिदानं बहु पुण्यं प्रसवेत्? शक्र आह – बहु भगवन्, बहु सुगत। भगवानाह – अतः स कौशिक कुलपुत्रो वा कुलदुहिता वा बहुतरं पुण्यं प्रसवति, य इमां प्रज्ञापारिमतामभिश्रद्दधदवकल्पयन्नधिमुच्य प्रसन्नचित्तो बोधाय चित्तमुत्पाद्य अध्याशयतः शृणुयादुद्गृह्णीयादुद्धारयेदवाचयेत्पर्यवाप्नुयात् प्रवर्तयेद् देशयेदपुदेशदुद्दिशेत् स्वाध्यायेत्, परेभ्यश्च विस्तरेण सम्प्रकाशयेत्, अर्थमस्या विवृणुयात्, मनसान्ववेक्षेत, यथाधिकया च प्रज्ञया अत्र परिमीमांसामापद्येत, अन्तशः पुस्तकगतामपि कृत्वा धारयेत् स्थापयेत् सद्धर्मचिरिस्थितिहेतोः – मा बुद्धनेत्रीसमुच्छेदो भूत्, मा सद्धर्मान्तर्धानम्।"[9]

(कौशिक यानी इन्द्र, तथागत के (शरीर) धातु जिनके गर्भ यानी बीच में रखे हुए हों, ऐसे सात रत्नों से बने हुए करोड़ों स्तूप हों, जो कुलपुत्र अर्थवा कुलपुत्री इस जम्बूद्वीप यानी भारतदेश को सब ओर से तथागत के (शरीर) धातु जिनके गर्भ यानी बीच में रखे हुए हों, ऐसे सात रत्नों से बने हुए स्तूपों से परिपूर्ण करवा दे और करवा करके जिन्दगी भर (सामान्य नहीं, बल्कि) दिव्य पुष्पों, दिव्य धूपों, दिव्य गन्धों, दिव्य माल्यों, दिव्य विलेपनों, दिव्य चूर्णों, दिव्य वस्त्रों, दिव्य छत्रों, दिव्य ध्वजों, दिव्य घण्टाओं, दिव्य पताकाओं के द्वारा और सब तरफ से दीपमालाओं और बहुविध दिव्य पूजाओं के द्वारा उन स्तूपों का सत्कार करे, गुरु की तरह माने, सम्मान करे, पूजे, अर्चना करे, सम्मान बढाये, तो क्या समझते हो, कौशिक, वह कुलपुत्र अथवा कुलपुत्री उस पूजादि अच्छे कार्य के आधार पर बहुत सारे पुण्य का उत्पादन करेगा? शक्र बोला – बहुत सारा भगवन्, बहुत सारा सुगत। भगवान् बोले – इससे भी बहुत ज्यादा पुण्य का उत्पादन वह कुलपुत्र अथवा कुलपुत्री करती है, जो इस प्रज्ञापारिमता पर अच्छी तरह से श्रद्धा रखते हुए (इस प्रज्ञापारिमता में पूरा) झुकाव करके प्रसन्नचित्त से बोधि के लिए चित्त का उत्पाद करके इरादा रखते हुए श्रवण करे, स्वीकार करे, धारण करे, वाचन करे, अध्ययन करे, (अपने जीवन में) कायम करे, सम्बद्ध अपनी गलतियों को स्वीकार करे, (अपने लिए) प्रस्तावित करे, अपने-आप को बताए, स्वाध्याय करे और दूसरों के लिए विस्तार के साथ प्रदर्शित करे, इसके अर्थ की व्याख्या करे, मन से विचार करे, बुद्धि से जितना अधिक हो सके उतना विवचेन करे, अन्त में पुस्तक बनाकर भी सद्धर्म को लम्बे समय तक कायम रखने के लिए धारण करे और स्थापित करे, कि – बुद्धत्व की तरफ ले जाने वाली प्रतिपदा का सम्पूर्ण उच्छेद न हो, सद्धर्म का लोप न हो।)

[7]वही, पृष्ठसंख्या 7

[8]वही, पृष्ठसंख्या 8

[9] Vaidya, P. L. (edt.) (1960), Astasahasrika Prajnaparamita with Haribhadra's Commentary called Aloka, The Mithila Institute of Post-Graduate Studies and Research in Sanskrit Learning, Darbhanga, pg. 28-29

इस वचन से स्पष्ट हो जाता है कि महायान के अनुसार, पूजा से निर्वाण मिलना तोबहुत दूर की बात है, पुण्य भी बहुत ही कम मिलता है। ऐसे में, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन जी की यह बात बिल्कुल ही गलत साबित हो जाती है कि महायान ने पूजा और धारणियों से निर्वाण को सुगम बना दिया।

(5) धारणियों पर विचार – धारणियों के बारे में गलतफहमी दूर करने के लिए, यह जान लेना जरूरी है कि महायान के किसी विद्वान् ने यह नहीं लिखा कि महायान के किसी सूत्र मेंधारणियों से निर्वाण प्राप्ति की बात मिलती है। महायान में धारणियों का मुख्य काम एक साधक को अमानुषी यानी भूत, प्रेत आदि से उत्पन्न बाधा से मुक्त करना ही लिखा है। महायान के जिस सूत्र में धारणियों से सम्बन्धित परिवर्त हैं, उनमें सामान्यतया अमानुषी बाधा से मुक्ति की बात ही लिखी मिलती है। उदाहरण के लिए, ***सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र*** के धारणीपरविर्त में पाँच धारिणयाँ प्रस्तुत की गई है। पहली भैषज्यराज बोधिसत्त्व के द्वारा प्रस्तुत की गई। दूसरी प्रदानशूर बोधिसत्त्व के द्वारा प्रस्तुत की गई। तीसरी वैश्रवण महाराज नामक देवता के द्वारा प्रस्तुत की गई। चौथी धारणी विरूढक महाराज नामक देवता के द्वारा प्रस्तुत की गई। पाँचवी धारणी लम्बा, विलम्बा, कूटदन्ती, पुष्पदन्ती, मुकुटदन्ती, केशिनी, अचला, मालाधारी, कुन्ती, सर्वसत्त्वोजोहारी और हारीती नाम वाली राक्षसियों के द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत की गई। इन धारणियों के प्रयोजन निम्नलिखित शब्दोंमें बताए गए हैं।

"दास्यामो वयं भगवंस्तेषां कुलपुत्राणां कुलदुहितृणां वा येषामयं सद्धर्मपुण्डरीको धर्मपयायः कायगतो वा स्यात् पुस्तकगतो वा रक्षावरणगुप्तये धारणीमन्त्रपदानि।"[10]

(हे भगवन्, वे कुलपुत्र या कुलकन्याएं जो इस सद्धर्मपुण्डरीक (नामक) धर्मपर्याय को कण्ठगत या पुस्तकगत करके रखती हैं, उनकी रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए हम धारणी-मन्त्र के पदों को देंगे।)

"अथ खलु प्रदानशूरो बोधिसत्त्वो महासत्त्वो भगवन्तमेतदवोचत्। अहमपि भगन्नेवंरूपाणां धर्मभाणकानामर्थाय धारणीपदानि दास्यामि येषामेवंरूपाणां धर्मभाणकानां न किञ्चिदवतारप्रेक्ष्यवतारगवेष्यवतारं लप्स्यते। तद् यथा यक्षो वा राक्षसो वा पूतनो वा कृत्यो वा कुम्भाण्डो वा प्रेतो वावतारप्रेक्ष्यवतारगवेष्यवतारं न लप्स्यत इति।"[11]

(तत्पश्चात् महासत्त्व बोधिसत्त्व प्रदानशूर भगवान् से यह बोले – हे भगवन्, मैं भी इस प्रकार के धर्मभाणकों के हित के लिए उन्हें इन धारणी-पदोंका उपदेश दूंगा, जिससे इस प्रकार के उन धर्मभाणकों का कोई अवतारप्रेक्षी[12] एवं अवतारगवेषी (उनके) अवतार को प्राप्त नहीं करेगा। अर्थात् अवतारप्रेक्षी एवं अवतारगवेषी यक्ष राक्षस, पूतन, कृत्य, कुम्भाण्ड या प्रेत उनके अवतार को नहीं प्राप्त करेगा।)

अथ खलु वैश्रवणो महाराजो भगवन्तमेतदवोचत्। अहमपि भगवन् धारणीपदानि भाष्ये तेषां धर्मभाणकानां हिताय सुखायानुकम्पायै रक्षावरणगुप्तये।"[13]

(तत्प"श्चात् महाराज वैश्रवण भगवान् से यह बोले – हे भगवन्, मैं भी उन धर्मभाणकों के हित, सुख, अनुकम्पा, रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए धारणी-पदों को कहूंगा।)

"अहमपि भगवन् धारणीपदानि भाषिष्ये बहुजनहिताय तेषां च तथारूपाणां
धर्मभाणकानामेवंरूपाणां सूत्रान्तधारकाणां सुखायानुकम्पायै रक्षावरणगुप्तये।"[14]

(हे भगवन्, मैं भी बहुजनहिताय बहुजनसुखाय तथा इस प्रकार के धर्मभाणकों एवं इस प्रकार के सूत्रान्तधारकों की रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए (इस) धारणी-मन्त्र के पदों को कहूँगा।)

"वयमपि भगवंस्तेषामेवंरूपाणां सूत्रान्तधारकाणां धर्मभाणकानां रक्षावरणगुप्तिं करिष्यामः स्वस्त्ययनं च करिष्यामो यथा तेषां धर्मभाणकानां न कश्चिदवतारप्रेक्ष्यवतारगवेष्यवतारं लप्स्यतीति।"[15]

(हे भगवन्, हम लोग भी इस प्रकार के सूत्रान्तधारकों एवं धर्मभाणकों की रक्षा, आवरण एवं गुप्ति करें(गी) तथा कल्याण करें(गी), जिससे उन धर्मभाणकों के अवतार को कोई अवतारप्रेक्षी या अवतारगवेषी नहीं प्राप्त करेगा।)

इनमें से एक भी जगह यह नहीं लिखा कि इन धारणियों रूपी मन्त्रों का जप करने सेकिसी साधक को निर्वाण की प्राप्ति हो जाएगी। इससे स्पष्ट है कि महापण्डित राहुल सांकृत्यायन जी की यह बात विचारपूर्वक लिखी गई बात नहीं है कि महायान ने पूजा और धारणियों से निर्वाण को सुगम बना दिया।

(6) पूजा और धारणियों के जाप के अलावा महायान का योगदान- महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के इस कथन से तो लगता है कि मानो महायान ने सिर्फ पूजापाठ और धारणी रूपी मन्त्रों के जाप के अलावा और कोई काम किया ही नहीं। महायान ने उस

---

[10]दास, राममोहन (अनु.) (2017), *सद्धर्म पुण्डरीक*, नई दिल्ली,सम्यक् प्रकाशन, पृष्ठसंख्या 406

[11]वही, पृष्ठसंख्या 407

[12]यहाँ अवतार शब्द का अर्थ है – मार्ग, जिसे अनुवादक शायद समझ नहीं पाया।

[13]दास, राममोहन (अनु.) (2017), *सद्धर्म पुण्डरीक*, नई दिल्ली,सम्यक् प्रकाशन, पृष्ठसंख्या 407

[14]वही, पृष्ठसंख्या408

[15]वही, पृष्ठसंख्या409

दर्शन का विकास किया है, जिसे खुद महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ ***दर्शन दिग्दर्शन*** में भारतीय दर्शन का चरम विकास कहा है। महायान में सिर्फ धारणी और पूजा ही नहीं होती थी, बल्कि *प्रमाणसमुच्चयः, प्रमाणवार्त्तिकम्, बोधिसत्त्वभूमिः, मध्यमकशास्त्रम्, चतुःशतकशास्त्रम्, प्रतीत्यसमुत्पादहृदयम्, शून्यतासप्ततिः, युक्तिषष्ठिका, मध्यमकावतारः, मध्यमकालोकः, महाप्रज्ञापारमिताशास्त्रम्, बोधिचर्यावतारः, तत्त्वसंग्रहः, बोधिपथप्रदीपः* आदि बेहतरीन तर्कशास्त्रीय और दार्शनिक ग्रन्थ भी तो महायान की ही देन हैं, जिनके कारण भारत में तार्किकता की जबर्दस्त उन्नति हुई थी। नालन्दा आदि महाविहारों में तो इन ग्रन्थों का अध्ययन विशेष रूप से होता था। इतना ही नहीं,भारत से महायान बुद्धधम्म जिन-जिन देशों में गया, उनमें भी इन ग्रन्थों को बहुत ही तार्किक ढंग से पढा और पढाया जाता रहा है। इसके फलस्वरूप उन देशों में इन ग्रन्थों पर अनेक व्याख्याएं भी लिखी गई। इसके बाद, आधुनिक युग में अनेक पश्चिमी देशों के शोधकर्ताओं ने इन ग्रन्थों को पढा और इन पर अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि अनेक आधुनिक भाषाओं में भी व्याख्याएं अब तक लिखी जा रही हैं। इससे महायानी तार्किक और गहन दार्शनिक साहित्य के सम्मान के कारण भारत की भी प्रतिष्ठा बढती है।

8. CONCLUSION:

राहुल जी ने अपनी टिप्पणी में महायान को बुद्धधम्म के विकृतीकरण का दोषी माना है। लेकिन, उनकी इस गम्भीर टिप्पणी का महायान के मूल ग्रन्थों में कोई आधार नहीं मिलता है। न तो महायान के द्वारा मान्य निर्वाण तो अत्यन्त कठिन है। महायान के मूल ग्रन्थों में निर्वाण को किसी भी पूजा और मन्त्रों से प्राप्य नहीं माना जा सकता। महायान के अनुसार निर्वाण की प्राप्ति के लिए निर्धारित समय कम से कम तीन कल्पों तक की साधना का प्रावधान है, जो कि थेरवाद के द्वारा मान्य निर्वाण-प्राप्ति के समय से बहुत ही ज्यादा है। यानी महायान ने तो निर्वाण को सरल बनाने की जगह अत्यन्त कठिन बना दिया है। इसी तरह, महायान के सूत्र साहित्य ने पूजा के पुण्य को तो बहुत ही मामूली बताया है और बुद्धदेसना को याद करने, बुद्धदेसना का प्रचार करना आदि कर्मों का पुण्य बुद्ध-पूजा के पुण्य से बहुत ज्यादा है। यानी महायान में मूर्ति-पूजा से कहीं ज्यादा बुद्ध की देसना को महत्त्व दिया। इसी तरह, महायान की धारणियों का उद्देश्य निर्वाण नहीं अमानुषी आफतों से बचाना है। इसलिए, कहा जा सकता है कि महायान को हमेशा पूजा-पाठ और धारणियों तक ही सीमित करके पेश करना समाज में महायान के प्रति अनावश्यक रूप से नकारात्मक दृष्टिकोण तैयार करने की कोशिश ही मानी जाएगी।

REFERENCES:

1. दास, राममोहन (अनु.) (**2017**), सद्धर्म पुण्डरीक, नई दिल्ली, सम्यक् प्रकाशन
2. धर्मरक्षित, भिक्षु (**1956**), बौद्धचर्या-विधि, वाराणसी, महाबोधि सभा
3. नरेन्द्रदेव, आचार्य (**2017**), बौद्धधर्म-दर्शन, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास
4. पलजोर, टशी (**2015**), महायान बौद्धधर्म का साधना क्रम और काय व्यवस्था, सारनाथ, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय
5. सांकृत्यायन, राहुल (**2015**), दर्शन-दिग्दर्शन, किताब महल, इलाहाबाद
6. Vaidya, P. L. (edt.) (1960), Astasahasrika Prajnaparamita with Haribhadra's Commentary called Aloka, The Mithila Institute of Post-Graduate Studies and Research in Sanskrit Learning, Darbhanga